हजारी प्रसाद द्विवेदी

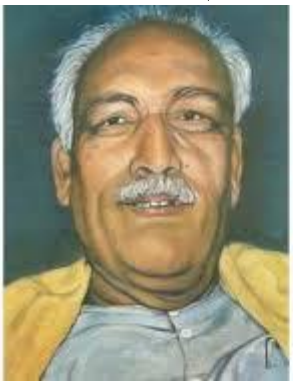

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आधुनिक हिंदी साहित्य की चेतना के प्रतीक हैं | उनके बहुआयामी व्यक्तित्व ने हिंदी साहित्य को भारतीय चिंतन परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाली सशक्त भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया | उन्होंने इतिहास और आलोचना जैसे सृजनशील विधाओं में नयी संभावनाओं के द्वार खोले | इतिहास, शोध, निबंधन, आलोचना, पत्र लेखन, संस्मरण, उपन्यास लेखन के क्षेत्रों में मौलिकता और उत्कृष्टता के कारण उन्हें महान रचनाकार बनाया | उनका जन्म 19 अगस्त, 1907 को बलिया जिले के आरत दुबे का छपरा नामक गांव में हुआ था |

वे वर्ष 1950 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष पद पर सुशोभित हुए | वर्ष 1957 में उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया गया | वे राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न संस्थाओं - नागरी प्रचारिणी सभा, विश्वभारती, राजभाषा आयोग, साहित्य अकादमी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान आदि की साहित्यिक गतिविधियों से निरंतर जुड़े रहे | द्विवेदी जी इतिहास को तीसरी आंख मानते थे | वे कहते थे कि जो इतिहास को स्वीकार न करे वह आधुनिक नहीं और जो चेतना को न माने वह इतिहास नहीं |

द्विवेदी जी की रचनाएं हैं -

उपन्यास	बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचंद्रलेखा, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा
निबंध	साहित्य सहचर, अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, कुटज, आलोक पर्व, विचार-प्रवाह
शोध, आलोचना	सूर-साहित्य की भूमिका, कबीर, हिंदी साहित्य का आदिकाल, मेघदूत - एक पुरानी कहानी, कालिदास की लालित्य योजना, पृथ्वीराजरासो, नाथ सिद्धों की बानियां	

19 मई, 1979 को दिल्ली में ब्रेन ट्यूमर से उनका निधन हो गया |